[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3574

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

"चित्रकला में रंगों के माध्यम से भावनाओं का उन्नयन"

ममता वर्मा
शोध छात्रा
चित्रकला विभाग, दृश्यकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

चित्रकला में भावनाओं को सजग रखने में रंगो का विशेष महत्व होता है। रंग हमारे सुख–दुख उत्तेजना, भय, उल्लास आदि सभी भावनाओं के उद्दीपन में सहायक होते है। रंग मनुष्य के मनोभावों के रूपात्मक प्रस्तुतिकरण में सहायक होते है। रंग केवल चित्र की रंगत ही नही है, यह बसन्त के सौरभ को सूर्य के उत्ताप को, मेघों के गर्जन को और वर्षा से भीगी मिट्टी के सौधें पन को भी व्यंजित करते है। रंग का तत्व जब समझ में आ जाता है तो काला रंग भी ज्ञान का आलोक भर देता है। इसलिये तो प्रागौतिहासिक मानव ने अपने मनोभावो को शिला पर उकेरने के लिए खनिज रंगो का प्रयोग किया जिसमें गेरू, रामरज, कोयला, खड़िया एवं हिरौजी, आदि प्रमुख रंग है। वास्तव में ये रंग प्रागौतिहासिक मानव के भावों के प्रदर्शन का मूलाधार थे।

चित्र की रचना में फलक पर रूप की सृष्टि, सृजन की क्रिया द्वारा ही सम्भव है और उस सृजन की क्रिया में सारा ज्ञान और अनुभव रंग और तूलिका की तकनीक का है। सामने रखे श्वेत अछूते ओर अक्षत फलक के अन्तराल में रंग भीरी तूलिका से मन के भावों को व्यक्त करने का जो कौशल है वह रंग के द्वारा ही सम्भव है। रंग ही भावों को चाक्षुष रूप प्रदान करता है। चित्रसूत्र में रंगो के अनेक नाम तथा उनके मिश्रण से अनेक रंगो को बनाने का वर्णन है। चित्रसूत्र के चालीसवें अध्याय में एक श्लोक में प्रधान रंग पॉच प्रकार के माने गये है–

मूलरङ्गा स्मृताः पंच श्वेतः पीतो विलोमतः।।

कृष्णों नीलष्च राजेन्द्र शतषोऽन्तरतः स्मृता।।

इस श्लोक के अनुसार प्रधान पॉच रंग माने गये है– श्वेत, पीला, पीलापन लिये हुए श्वेत, कृष्ण तथा नील और इसके आगे तो सैकड़ो भेद किये जा सकते है–

पूर्णरङ्गविभागेन भावकल्पनया तथा।

स्वबुद्धया कारयेन्द्रङ्गाषंताषोऽथ सहस्त्रषः।।

अर्थात अपनी बुद्धि से भावों की कल्पना करके रंगो के अनेक विभाजन करके हजारों रंग बनाये जा सकते है।
कला का चाक्षुष रूप आँख को संवदेना प्रदान करता है, किन्तु वह भावों की अभिव्यक्ति का साधन है, स्वंय साध्य नहीं भावों का उदय मन में होता है। मनोभावों की तीव्रता मूर्तरूप में कला में अवतरित होती है। किसी चित्र में फैले वासन्ती रंग के विस्तार मात्र से उत्फुल्लता का भाव प्रदर्शित हो जाता है। इसी प्रकार अन्य रंग भी हमारे मनोभावों को उत्प्रेरित करते है। कलाकृति के सभी तत्वों के विश्लेषण से देखा जा सकता है कि उनके क्या मनोवैज्ञानिक प्रभाव होते है, किन्तु भाव के उदय के लिए इतने विवेचन की आवश्यकता नही होती। रचना का समग्र प्रभाव आँख के तन्तुओं में संवदेना जगाता है और सीधे मन पर उस भाव की जागृति हेतु सहायक होता है। प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल के कलाकारों ने अपनी चित्रकला में भावों की अभिव्यक्त के लिए रंगो को एक सशक्त माध्यम के रूप से प्रयोग किया। विशेष रूप से एक कलाकार रंगो के माध्यम से अपनी कल्पना की मूर्त रूप में परिवर्तित करता है।
प्रत्येक कलात्मक रूप अपने सौन्दर्य से मनोगत भाव तक ले जाता है। मनुष्य के मन में अनन्त भाव उमड़ते है, जो विशिष्ट भाव कलाकृति में अवतरित होते है। उनके अतिरिक्त उस क्षण अन्य भावों का लोप हो जाता है। भावों के माध्यम से ही रसानुभूति होती है। मूर्ति अथवा चित्र की स्थूल सामग्री में भिन्नता हो सकती है, किन्तु उसकी भावाभिव्यक्ति में अन्तर नही होता। भौतिक पदार्थ मनोभावो की छाप से कलात्मक होकर भावो के स्फुरण का अटूट स्त्रोत बन जाते है। रूप के प्रभाव से नेत्र आनन्दमय होकर तृप्त होते है यहॉ से भाव हृदय में विभिन्न प्रकार के रसो को प्रवाहित करते है। भरत ने रसों की संख्या आठ मानी है रंगो को विभिन्न रसों के साथ संयोजित किया गया जैसे– श्रृंगार रस का श्याम, हास्य का श्वेत, करूण का कपोत, वीर का

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

गौर, रौद्र का रक्त, वीभत्स का नील, भयानक का काला एवं अद्भुत का पीला रंग होता है।[1] रंग के साथ रस चित्र में विविधता उत्पन्न कर उसे और आकर्षक रूप प्रदान करता है रंगो के संदर्भ में नाट्यशास्त्र में कहा गया है:–

"वर्णानां तु विधिं ज्ञात्वा तथा प्रकृतिमेव च कुर्यादंगस्य रचनाम्।"

उपरोक्त श्लोक में रंग की विधि और प्रकृति अर्थात कौन सा रंग आकृति को छिपाकर रखता है, कौन उसे चित्रित करता है इसकी विधियों को एवं कौन वर्ण आनन्दित करता है कौन विषादित करता है, किससे वैराग्य का बोध होता है, कौन अनुराग को सूचित करता है आदि वर्णो की प्रकृति समझकर उपयुक्त रंगो द्वारा कलाकृति की रचना करनी चाहिए। कलाकर को चित्रकला में रंग के मनोयोगपूर्वक समावेश का उचित बोध होगा तभी उसकी कलाकृति नयनाभिराम होगी।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. *अग्रवाल, जी0के0–कला सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र, संजय पब्लिकेशन्स, आगरा, पंचम संस्करण, 2007।*
2. *उपाध्याय, विद्यासागर –भारतीय कला की कहानी, दी स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी, जयपुर, 1993।*
3. *चतुर्वेदी, ममता–सौन्दर्यशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, पांचवां संस्करण, 2010।*
4- *द्विवेदी, प्रेम शंकर–भारतीय चित्रकला के विविध आयाम, कला प्रकाशन, वाराणसी, 2007।*